दर्शन मार्गणा

Presentation Developed By :
Smt Sarika Vikas Chhabra

जं सामण्णं गहणं, भावाणं णेव कट्टुमायारं।
अविसेसिदूण अट्ठे, दंसणमिदि भण्णदे समये॥482॥

❀अर्थ - भाव अर्थात् सामान्य-विशेषात्मक पदार्थों के आकार अर्थात् भेदग्रहण न करके जो सामान्य ग्रहण अर्थात् स्वरूपमात्र का अवभासन है, उसे परमागम में दर्शन कहते हैं ॥482॥

दर्शन

सामान्य-विशेषात्मक पदार्थ के भेद को ग्रहण न करके

जो सामान्य ग्रहण (स्वरूपमात्र का अवभासन) करता है,

उसे दर्शन कहते हैं ।

यह दर्शन जाति, क्रिया, गुण, प्रकार आदि विशेष न करके

स्वयं का और अन्य का सामान्य ग्रहण करता है ।

भावाणं सामण्ण-विसेसयाणं सरूवमेत्तं जं।
वण्णणहीणग्गहणं, जीवेण य दंसणं होदि॥483॥

❀अर्थ - सामान्य-विशेषात्मक पदार्थों का विकल्परहित स्वरूपमात्र जैसा है, वैसा जीव के द्वारा स्व-पर सत्ता का अवभासन दर्शन है ॥483॥

दर्शन

पदार्थ सामान्य-विशेषात्मक होते हैं ।

ऐसे पदार्थों का स्वरूपमात्र,

भेदरहित

निर्विकल्प ग्रहण करना

दर्शन कहलाता है ।

दर्शन याने आँखों से देखना नहीं है, बल्कि दर्शन नाम के गुण का कार्य है।

ज्ञान | दर्शन

समानता

ज्ञान	दर्शन
जैसे ज्ञान सामान्य-विशेषात्मक पदार्थ को जानता है,	वैसे ही दर्शन भी सामान्य-विशेषात्मक पदार्थ को ही जानता है
जैसा ज्ञान स्व-पर प्रकाशक है,	वैसे ही दर्शन भी स्व-पर प्रकाशक होता है

अंतर

ज्ञान	दर्शन
ज्ञान विकल्पात्मक होता है,	परन्तु दर्शन निर्विकल्प होता है

दर्शन किसे कहते हैं?

कर्तृ साधन	करण साधन	भाव साधन
जो देखता है	जिसके द्वारा देखा जाता है	देखना मात्र

दर्शन के प्रकार

- चक्षुदर्शन
- अचक्षुदर्शन
- अवधिदर्शन
- केवलदर्शन

ये 3 दर्शन क्षायोपशमिक हैं ।

क्षयोपशम किसे कहते हैं?

क्षय

- वर्तमानकालीन सर्वघाति स्पर्धकों का उदयाभावी क्षय

उपशम

- भविष्य में उदय में आने योग्य सर्वघाति स्पर्धकों का सदवस्थारूप उपशम

उदय

- वर्तमानकालीन देशघाती स्पर्धकों का उदय

इन 3 रूप कर्म की अवस्था को क्षयोपशम कहते हैं ।

उदयाभावी क्षय

सर्वघाती प्रकृतियों का अनंत गुणा हीन होकर देशघाती में परिवर्तित होकर उदय में आने को उदयाभावी क्षय कहते हैं |

इसमें सर्वघाति स्पर्धक उदय में आने के एक समय पूर्व देशघाती में परिवर्तित होते हैं |

उदयाभावी क्षय

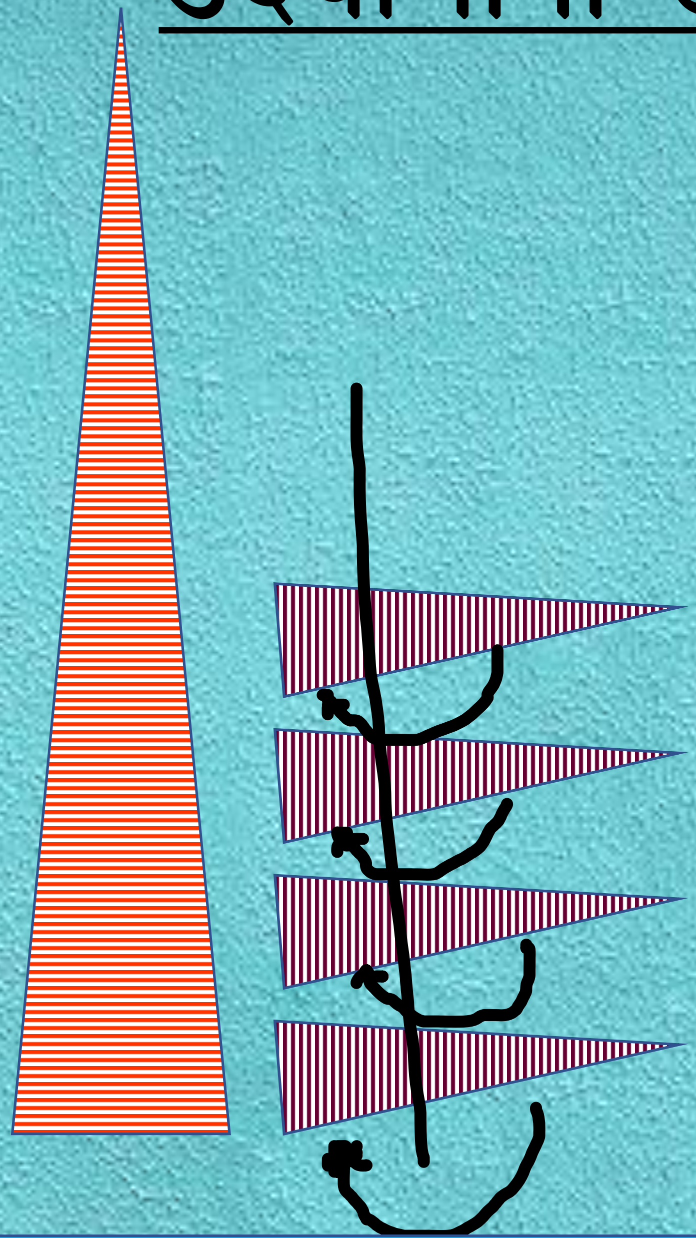

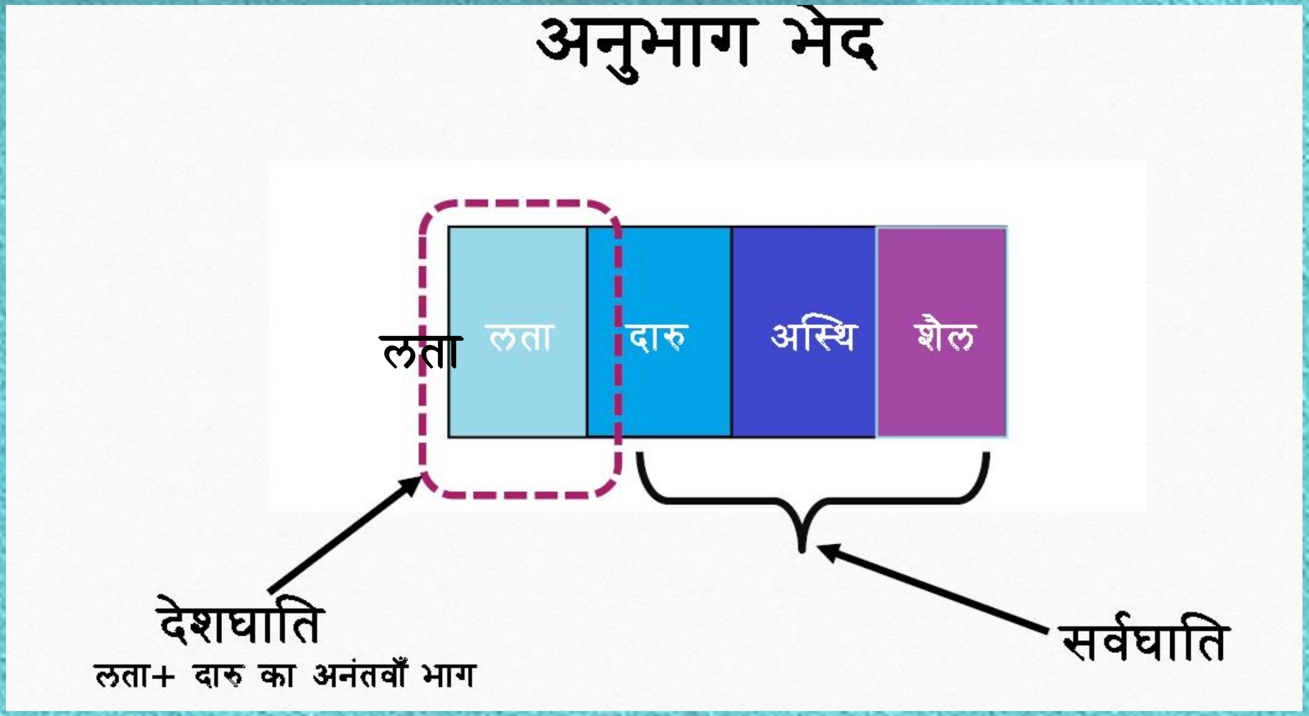

अनुभाग का अनंत गुणा हीन होना
सर्वघाति का देशघाति रूप उदय होना

सदवस्थारूप उपशम

वर्तमान समय को छोड़कर

भविष्य में उदय में आने वाले कर्मों के

सत्ता में रहने को

सदवस्थारूप उपशम कहते हैं ।

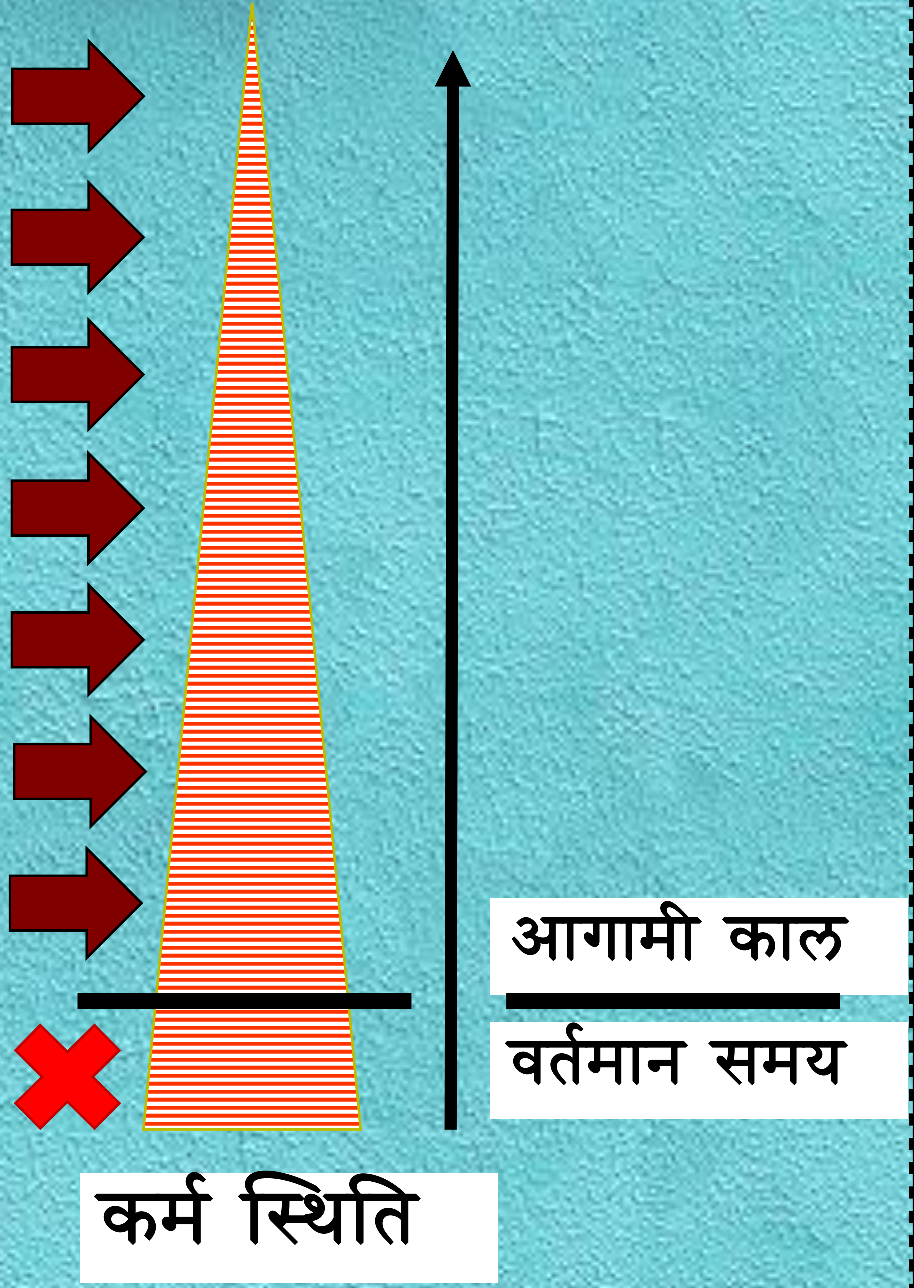

चक्खूण जं पयासइ, दिस्सइ तं चक्खुदंसणं वेंति।
सेसिंदियप्पयासो, णायव्वो सो अचक्खू त्ति॥484॥

❀अर्थ - नेत्रों संबंधी जो सामान्यग्रहण सो जिसके द्वारा देखता है, प्रकाशता है अथवा उस नेत्र के विषय का प्रकाशन उसे गणधरादिक चक्षुदर्शन कहते हैं।

❀पुनश्च, नेत्र बिना चार इन्द्रिय और मन के विषय का जो प्रकाशन, वह अचक्षुदर्शन है ऐसा जानना ॥484॥

चक्षुदर्शन

चक्षु इन्द्रिय के विषय का प्रकाशन (अवभासन)

चक्षु इन्द्रिय संबंधी सामान्य ग्रहण

अचक्षुदर्शन

शेष 4 इन्द्रिय और मन के विषय का प्रकाशन

शेष 4 इन्द्रिय और मन संबंधी सामान्य ग्रहण

परमाणुआदियाइं, अन्तिमखंधं त्ति मुत्तिदव्वाइं।
तं ओहिदंसणं पुण, जं पस्सइ ताइं पच्चक्खं॥485॥

❀अर्थ - परमाणु से लेकर महास्कंध तक जो मूर्तिक द्रव्य उनको जो प्रत्यक्ष देखता है, वह अवधिदर्शन है। इस अवधिदर्शनपूर्वक ही अवधिज्ञान होता है ॥485॥

अवधिदर्शन

परमाणु से लेकर महास्कंध पर्यन्त मूर्तिक द्रव्यों को जो प्रत्यक्ष देखता है

बहुविहबहुप्पयारा, उज्जोवा परिमियम्मि खेत्तम्मि।
लोगालोगवितिमिरो, जो केवलदंसणुज्जोओ॥486॥

❀अर्थ - चन्द्रमा, सूर्य, रत्नादिक संबंधी बहुत भेदों से युक्त बहुत प्रकार के उद्योत जगत् में हैं। वे परिमित यानी मर्यादासहित क्षेत्र में ही अपना प्रकाश करने को समर्थ हैं। इसलिये उन प्रकाशों की उपमा देने योग्य नहीं ऐसा समस्त लोक और अलोक में अन्धकाररहित केवल प्रकाशरूप केवलदर्शन नामक उद्योत जानना ॥486॥

केवलदर्शन

अनेकों भेद सहित

अनेक प्रकार के उद्योतक (सूर्यादि)

परिमित क्षेत्र में ही प्रकाश करते हैं ।

परन्तु जो लोक-अलोक में अंधकाररहित प्रकाशरूप है

वह केवलदर्शन है ।

केवलदर्शन

जो त्रैकालिक पदार्थों का

युगपत् सामान्य अवभासन करे

नोट— संसारी जीवों को दर्शनपूर्वक ज्ञान होता है । अरिहंत, सिद्ध को दर्शन-ज्ञान युगपत् पाए जाते हैं ।

जोगे चउरक्खाणं, पंचक्खाणं च खीणचरिमाणं।
चक्खूणमोहिकेवलपरिमाणं, ताण णाणं च॥487॥

❀अर्थ - मिथ्यादृष्टि से लेकर क्षीणकषाय गुणस्थानपर्यन्त जितने पंचेन्द्रिय हैं उनका तथा चतुरिन्द्रिय जीवों की संख्या का परस्पर जोड़ देने से जो राशि उत्पन्न हो उतने ही चक्षुदर्शनी जीव हैं और

❀अवधिज्ञानी तथा केवलज्ञानी जीवों का जितना प्रमाण है उतना ही क्रम से अवधिदर्शनी तथा केवलदर्शनवालों का प्रमाण है ॥487॥

शक्तिरूप चक्षुदर्शन

चक्षु इन्द्रिय पर्याप्ति की पूर्णता के अभाव में प्रगटरूप चक्षुदर्शन नहीं है । क्षयोपशमरूप चक्षुदर्शन प्रगट है ।

स्वामी		गुणस्थान	संख्या
चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त	पंचेन्द्रिय अपर्याप्त	1	जगत्प्रतर / प्रतरांगुल / असंख्यात

व्यक्तिरूप चक्षुदर्शन

जहा चक्षुदर्शन का उपयोगरूप प्रवर्तन पाया जा सकता है

स्वामी		गुणस्थान	संख्या
चतुरिन्द्रिय पर्याप्त	पंचेन्द्रिय पर्याप्त	1-12	जगत्प्रतर / प्रतरांगुल/संख्यात

अवधिदर्शनी

अवधिज्ञानी के समान

$\frac{\text{पल्य}}{\text{असंख्यात}}$

गुणस्थान — 4 - 12

केवलदर्शनी

केवलज्ञानी के समान

अनन्त = सिद्ध + अरहन्त

गुणस्थान— 13, 14, सिद्ध

एइंदियपहुदीणं, खीणकसायंतणंतरासीणं।
जोगो अचक्खुदंसण-जीवाणं होदि परिमाणं॥488॥

❀अर्थ - एकेन्द्रिय जीवों से लेकर क्षीणकषायपर्यन्त अनंतराशि के जोड़ को अचक्षुदर्शन वाले जीवों का प्रमाण समझना चाहिये ॥488॥

अचक्षुदर्शनी

प्रथम गुणस्थान से बारहवें गुणस्थानवर्ती सर्व जीव

= अनंत

= संसार राशि से कुछ कम

१३-

- Reference : गोम्मटसार जीवकाण्ड, सम्यग्ज्ञान चंद्रिका, गोम्मटसार जीवकांड - रेखाचित्र एवं तालिकाओं में

Presentation developed by
Smt. Sarika Vikas Chhabra

- For updates / feedback / suggestions, please contact
  - Sarika Jain, sarikam.j@gmail.com
  - www.jainkosh.org
  - ☎: 94066-82889